Vol 5 Issue 6 March 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review of Research

International Online Multidisciplinary Journal

ISSN: 2249-894X   Impact Factor : 3.1402(UIF)   Volume - 5 | Issue - 6 | March - 2016

समकालीन हिन्दी दलित साहित्य विमर्श

डॉ.सुरेशकुमार केसवानी

एम.ए., बी.एड, एम.फिल., पीएच.डी

अधिव्याख्याता, विभाग प्रमुख हिन्दी , सीताबाई कला महाविद्यालय,अकोला.

सारांश :

दलित शब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया होता है जो समाज–व्यवस्था के तहत सबसे निचली पायदान पर होता है । इस समूह को ही संविधान में अनुसूचित जातियाँ कहा गया है जो जन्मना अछूत है ।दलित शब्द साहित्य के साथ जुड़कर एक ऐसी साहित्यिक धारा की ओर संकेत करता है, जो मानवीय सरोकारों और संवेदनाओं की ओर संकेत करता है । जो मानवीय सरोकारों और संवेदनाओं की यथार्थवादी अभिव्यक्ति है ।आज दलितों में, खास तौर से कस्बों, नगरों और महानगरों में एक ऐसा वर्ग पैदा हो गया है जिसने गुणात्मक रूप से अच्छी सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में जन्म लेने के कारण जातीय उत्पीड़न को बिल्कुल नहीं झेला है । इस प्रकार का दलित अन्य अमीर तबकों की तरह न सिर्फ दलितों का दुश्मन साबित हो रहा है अपितु स्वयं दलितों में ही शोषकों की एक श्रेणी को संभव बना रहा है । ऐसा दलित अगर सभी दलितों की पीड़ा को जानने, समझने और महसूस करने का दावा करता है तो उसे दलित विमर्शकार ही तय करें कि यह कितना उचित है ।दलित वर्ग में जन्म न लेने के बावजूद प्रेमचंद नें अपने निजी अनुभव और मानवीय संवेदना के आधार पर अपने साहित्य में न सिर्फ दलित पीड़ा का गहन चित्रण किया है बल्कि उन पर सदियों से जुल्मों–सितम की बरसात करने वाली ब्राह्मणवादी–सामंतवादी शक्तियों का न सिर्फ भंडाफोड़ किया है बल्कि उन्हें जनविरोधी साबित करते हुए उन पर निर्ममता से प्रहार भी किए । यह कोई सार्वभौमिक सत्य नहीं है कि दलित की पीड़ा को दलित ही जानता है और वही इसकी सही अभिव्यक्ति कर सकता है । भले ही वह दलित साहित्य हो । दलित साहित्यकार अपने रचनाकर्म को केवल जातीय शोषण तक ही क्यों सीमित करे । आज समाज में जाति के अलावा भी ऐसी सैकड़ों समस्याएं हैं जिनसे दलितों को भी दो चार होना पड़ रहा है । क्यों गरीबी,भुखमरी, बेकारी, भ्रष्टाचार और मंहगाई किसी दलित रचनाकार के रचनाकर्म का विषय नहीं हो सकते । क्या इन समस्याओं के चलते दलित समाज के अन्य उत्पीड़ितों से नहीं

जुड़ते ? दलित साहित्यकार क्यों समूचे आकाश पर नहीं लिख सकता है ? दलित साहित्य के प्रचार–प्रसार व पठन–पाठन को दलितों तक सीमित करने का अर्थ निकलता है । यह न तो दलित साहित्य के हित में है और न दलितों के । दलित वृहत्तर समाज का अंग हैं । सदियों से जातिगत अपमान व भेद–भाव की जो पीड़ा दलितों नें झेली है उससे समाज के अन्य वर्गों को भी परिचित होना चाहिए । दलित वर्ग तो उसमें एक हद तक वाकिफ है ही । 'केवल दलितों के लिए' का लेबल लगाकर किसी दलित रचना को अन्य वर्गों द्वारा पढ़े जाने से नहीं रोका जा सकता है । बल्कि दलित साहित्य के व्यापक आधार के निर्माण के लिए यह जरूरी भी है कि वह समाज के अन्य वर्गों तक भी पहुँचे । इससे दलित आंदोलन को दूसरे वर्गों में अपने सहानुभूतिक और समर्थक मिलेंगे । दूसरे तबकों में दलित साहित्य के प्रचार–प्रसार से एकता का रास्ता खुलेगा ।

प्रस्तावना –

दलित शब्द का अर्थ : दलित शब्द का अर्थ है–जिसका दहन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, विनिष्ट, मर्दित, पस्त–हिम्मत, हतोत्साहित, वंचित आदि । डॉ.श्यौराज सिंह 'बेचैन' दलित शब्द की व्याख्या करते हुए कहते हैं – 'दलित वह है जिसे भारतीय संविधान नें अनुसूचित जाति का दर्जा दिया है ।'इसी प्रकार कँवल भारतीय का मानना है कि–'दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है, जिसे कठोर और गंदे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है । जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया है, और जिस पर सछूतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की, वही दलित है, और इसके अंतर्गत वही जातियाँ आती हैं जिन्हें अनुसूचित जातियाँ कहा जाता है ।'

मोहनदास नेमिशराय 'दलित' शब्द को और अधिक विस्तार देते हुए कहते हैं कि दलित शब्द मार्क्स प्रणित सर्वहारा शब्द के लिए समानार्थी लगता है । लेकिन इन दोनो शब्दों में पर्याप्त भेद भी है । दलित की व्याप्ति अधिक है तो सर्वहारा की सीमित । दलित के अंतर्गत सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक शोषण का अंतर्भाव होता है, तो सर्वहारा केवल आर्थिक शोषण तक ही सीमित है । प्रत्येक दलित व्यक्ति सर्वहारा के अंतर्गत आ सकता है, लेकिन प्रत्येक सर्वहारा को दलित कहने के लिए बाध्य नहीं हो सकत अर्थात सर्वहारा की सीमाओं में आर्थिक विषमता का शिकार वर्ग आता है, जबकि दलित विशेष तौर पर सामाजिक विषमता का शिकार होता है ।'

दलित शब्द व्यापक अर्थबोध की अभिव्यंजना देता है । भारतीय समाज जिसे अस्पृश्य माना गया वह व्यक्ति ही दलित है । दुर्गम पहाड़ों, वनों के बीच जीवन–यापन करने के लिए बाध्य जन जातियाँ और आदिवासी, जरायमपेशा घोषित जातियाँ सभी इसी दायरे में आती हैं । सभी वर्गों की स्त्रियाँ दलित हैं । बहुत कम श्रम मूल्य पर चौबीसों घंटे काम करनेवाले श्रमिक, बंधुआ मजदूर दलित की श्रेणी में आते हैं ।

इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि दलित शब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया होता है जो समाज–व्यवस्था के तहत सबसे निचली पायदान पर होता है । वर्ण–व्यवस्था ने दिसे जिसे अछूत या अन्त्यज की श्रेणी में रखा । उसका दलन हुआ । शोषण हुआ, इस समूह को ही संविधान में अनुसूचित जातियाँ कहा गया है जो जन्मना अछूत है ।दलित शब्द साहित्य के साथ जुड़कर एक ऐसी साहित्यिक धारा की ओर संकेत करता है, जो मानवीय सरोकारों और संवेदनाओं की ओर संकेत करता है । जो मानवीय सरोकारों और संवेदनाओं की यथार्थवादी अभिव्यक्ति है ।

दलित साहित्य और साहित्यकार : जाति से दलित ही दलित साहित्यकार है । इस प्रस्थापना के अनुसार किसी साहित्यकार को दलित साहित्यकार होने के लिए यह अनिवार्य है कि वह दलित जाति में पैदा हुआ हो । किन्तु अभी भी यह मसला काफी बहस की गुंजाइश रखता है कि आखिर दलित कौन है ? दलित साहित्य की मुख्य धारा के चिंतकों का मानना है कि दलित साहित्यकार वही है जो जाति से दलित है । दलित साहित्य को व्यापक अर्थों में न देखकर दलित जाति के संदर्भ में ही देखते हैं किंतु वहाँ भी 'दलित'शब्द की व्याख्या को लेकर अस्पष्टता है । वे दलितों में उभर रहे अभिजातीय व शोषक वर्ग के उभार को दरकिनार ही करते आ रहे हैं किन्तु दलित साहित्य के चिंतकों की दूसरी धारा दलित शब्द के व्यापक अर्थ लगाती है । उनका मानना है कि किसी भी जाति या धर्म से संबंध रखनेवाला व्यक्ति अगर सामाजिक और आर्थिक रूप से शोषित है तो उसे भी दलितों की एक श्रेणी के रूप में रेखांकित किया जाना चाहिए । आज दलितों में, खास तौर से कस्बों, नगरों और महानगरों में एक ऐसा वर्ग पैदा हो गया है जिसने गुणात्मक रूप से अच्छी सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में जन्म लेने के कारण जातीय उत्पीड़न को बिल्कुल नहीं झेला है । इस प्रकार का दलित अन्य अमीर तबकों की तरह न सिर्फ दलितों का दुश्मन साबित हो रहा है अपितु स्वयं दलितों में ही शोषकों की एक श्रेणी को संभव बना रहा है । ऐसा दलित अगर सभी दलितों की पीड़ा को जानने, समझने और महसूस करने का दावा करता है तो उसे दलित विमर्शकार ही तय करें कि यह कितना उचित है ।

अगर इस अभिजातीय और शोषक दलित को दलित साहित्य का प्रणेता माना जा सकता है तो किसी अन्य जाति में पैदा हुआ दलितवादी जनवादी लेखक क्यों नहीं ? क्या उसे दलितों का समर्थक केवल इसलिए नहीं माना जाना चाहिए क्योंकि उसने दलित जाति में जन्म नहीं लिया है । यही आधार गौतम बुद्ध के संदर्भ में भी इस्तेमाल किया जाना चाहिए । गौतम बुद्ध नें राजघराने में जन्म लिया और दलित जाति से उनका दूर दूर तक नाता नहीं था । लेकिन अपने त्याग और दलितवादी चिंतन के आधार पर वे दलितों के मसीहा बने । गौतम बुद्ध नें सभी पीड़ितों को अपने दामन में पनाह दी और उनके विहारों में अन्य जातियों के गरीबों को भी बराबरी का दर्जा मिला । इसके अतिरिक्त इन्हीं विहारों में राजा, सामन्त और व्यापारी लोग भी आते रहे । दलितों के जीवन की विसंगतियों पर व्यापक चिंतन और सृजन करनेवाले महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द को भी इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए किन्तु उनके प्रति दलित विचारकों का नजरिया काफी तंग है ।

कौनसा साहित्य दलित साहित्य ? : क्या दलितों द्वारा दलितों पर रचा गया साहित्य ही दलित साहित्य है । अधिकांश दलित विमर्शकारों द्वारा यह बात उठाई जा रही है कि केवल दलितों द्वारा दलितों की जीवन परिस्थितियों पर लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है । यह एक संकीर्ण और अन्तर्विरोधी प्रस्थापना है । इस संदर्भ में संत कबीर, नामदेव, पीपा, रैदास, ज्ञानदेव, तुकाराम और एकनाथ आदि का साहित्य देखा जा सकता है । उनके जमाने में सामंतवादी व्यवस्था काफी मजबूत थी और वर्ण व्यवस्था भी । ये लोग केवल इसलिए महान कवि नहीं माने जाएंगे कि उन्होंने दलित जीवन का अपने काव्य में व्यापक चित्रण किया बल्कि वे इसलिए बड़े और महान कवि हैं कि उन्होंने पूरे समाज में व्याप्त बुराइयों और शोषणकारी व्यवस्था के विरोध में जीवन भर सशक्त सृजनकर्म किया । दलित वर्ग में जन्म लेने के बावजूद कबीर साहित्य में इक्का–दुक्का प्रसंगों के अलावा न तो दलित पात्र आते हैं और न दलित जीवन की विडम्बनाओं का ज़िक्र आता है बल्कि

पूरे समाज में व्याप्त धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास व रूढ़ियाँ ही उन्हें ज्यादा परेशान करती हैं । अपने संपूर्ण काव्य में वे उन्हीं पर क्रान्तिकारी ढंग से प्रहार करते नजर आते हैं । फिर उपरोक्त प्रस्थापना के आधार पर उन्हें दलित साहित्य की बुनियाद कैसे माना जा सकता है ?

इसके विपरीत दलित वर्ग में जन्म न लेने के बावजूद प्रेमचंद नें अपने निजी अनुभव और मानवीय संवेदना के आधार पर अपने साहित्य में न सिर्फ दलित पीड़ा का गहन चित्रण किया है बल्कि उन पर सदियों से जुल्मों–सितम की बरसात करने वाली ब्राह्मणवादी–सामंतवादी शक्तियों का न सिर्फ भंडाफोड़ किया है बल्कि उन्हें जनविरोधी साबित करते हुए उन पर निर्ममता से प्रहार भी किए । यह कोई सार्वभौमिक सत्य नहीं है कि दलित की पीड़ा को दलित ही जानता है और वही इसकी सही अभिव्यक्ति कर सकता है । भले ही वह दलित साहित्य हो । दलित साहित्यकार अपने रचनाकर्म को केवल जातीय शोषण तक ही क्यों सीमित करे । आज समाज में जाति के अलावा भी ऐसी सैकड़ों समस्याएं हैं जिनसे दलितों को भी दो चार होना पड़ रहा है । क्यों गरीबी,भुखमरी, बेकारी, भ्रष्टाचार और मंहगाई किसी दलित रचनाकार के रचनाकर्म का विषय नहीं हो सकते । क्या इन समस्याओं के चलते दलित समाज के अन्य उत्पीड़ितों से नहीं जुड़ते ? दलित साहित्यकार क्यों समूचे आकाश पर नहीं लिख सकता है ? उसके लेखन और ॰ष्टि को केवल जाति की सीमाओं में कैद करनेवाले क्या वास्तव में दलित साहित्य के आंदोलन को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं ।

उपसंहार

दलित साहित्य के प्रचार–प्रसार व पठन–पाठन को दलितों तक सीमित करने का अर्थ निकलता है । यह न तो दलित साहित्य के हित में है और न दलितों के । दलित वृहत्तर समाज का अंग हैं । सदियों से जातिगत अपमान व भेद–भाव की जो पीड़ा दलितों नें झेली है उससे समाज के अन्य वर्गों को भी परिचित होना चाहिए । दलित वर्ग तो उसमें एक हद तक वाकिफ है ही । 'केवल दलितों के लिए' का लेबल लगाकर किसी दलित रचना को अन्य वर्गों द्वारा पढ़े जाने से नहीं रोका जा सकता है । बल्कि दलित साहित्य के व्यापक आधार के निर्माण के लिए यह जरूरी भी है कि वह समाज के अन्य वर्गों तक भी पहुँचे । इससे दलित आंदोलन को दूसरे वर्गों में अपने सहानुभूतिक और समर्थक मिलेंगे । दूसरे तबकों में दलित साहित्य के प्रचार–प्रसार से एकता का रास्ता खुलेगा ।

संदर्भ संकेत :

1.हिन्दी दलित साहित्य आंदोलन : कुछ सवाल, कुछ विचार – मुकेश मानस
2.दलित साहित्य में सामाजिक न्याय – देवेन्द्र चौबे
3.दलित साहित्य की अवधारणा – ओमप्रकाश वाल्मीकि
4.साहित्य में दलित विमर्श – डॉ.उषा त्यागी
5.हिन्दी साहित्य में दलित चेतना – डॉ.आनन्द वास्कर
6.प्रेमचन्द साहित्य में दलित चेतना – डॉ.बलवन्त साधू जाधव

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org